Vol 6 Issue 10 April 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

''नारी चेतना और सिनेमा''

प्रा. पोपट यशवंत जाधव
हिंदी विभाग , मु.सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर,
ता. बारामती, जि. पुणे।

प्रस्तावना

आज भारतीय सिनेमा पर आरोप लगाया जा रहा है, कि पर्दे पर दिखाई जानेवाली औरत को शृँगारिकता और सौंदर्य प्रदर्शन की आड में पुरूषों के भोग का बिंब बनाया जा रहा है। यह आरोप काफी हद तक हालात को लक्षित करता है। उपभोक्तावादी संस्कृति में नारी देह ही नहीं बल्कि पुरूष के जिस्म की भी कीमत लग चुकी है। समकालीन सिनेमा बाजारवाद की उत्पादन प्रणाली का अभिन्न अंग बन चुका है। हिंदी सिनेमा को लेकर वैसा वैचारिक मंथन नहीं हुआ है जैसा कि हॉलीवुड तथा यूरोपीयसिनेमा के संबंध में लारा माल्वी, काजा सिल्वरमैन, टेरिसा दे लारेतिस तथा बार्बरा क्रीड की रचनाओं में मिलता है। देह को कितना और कैसे दिखाया जाए इसे अलग अलग सेंसर अधिनियमों की प्रदर्शन(नग्नता, अश्लीलता) संबंधी मान्यताओं द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

पश्चिमी जगत् के नारी आंदोलनों की शुरूआत तब हुई जब उन्नीसवीं शती की समाप्ति तथा बीसवीं शती के आरंभ में सुशिक्षित महिलाओं ने मताधिकार की माँग उठाई इसे आंदोलन की पहली लहर माना जाता है। दूसरी लहर का ताल्लुक फ्रांसीसी दार्शनिक तथा साहित्यकार सिमोन द बोउवा के उपन्यास The second sex(1949) से है जिसमें बोउवा ने दावा किया कि स्त्री जन्म से नहीं होती बल्कि वह बनाई जाती है। फ्रॉयड ने नारीवाद की दूसरी लहर का उद्घाटन किया। The Feminine Mystique में उन स्त्रियों की मानसिक अवस्था का अध्ययन किया, जो दूसरे महायुद्ध के उपरांत मातृत्व का दायित्व अकेले वहन करती रही। नारीवाद साहित्य के साथ साथ सिनेमा में नारी बिंब की प्रस्तुतियों की जाँच करने लगा।1971 में लंदन में 'लंदन महिला फिल्म संगठन'की स्थापना हुईजिसमें लारा माल्वी तथा क्लैयर जान्सटन ने बढचढकर हिस्सेदारी की। इसके एक साल बाद एडिनबरा में विश्व का पहला नारी फिल्म महोत्सव आयोजित किया गया। इसके बाद आरंभ हुआ नारीवादी फिल्म लेखन का सिल सिला। इसकी शुरूआत माजरी रोजन की Popcorn venes(1973) जो एन मेलन की वउमद दक मगनंसपजल पद जीम दमू पिसउ(1973) तथा मौली हैस्कल की पुस्तक from reverence to rape(1973) से हुई। नारीवादी फिल्म लेखन की प्रभावशाली हस्ताक्षर लारा माल्वी ने 1975 में ब्रिटेन की 'स्क्रीन' पत्रिका में प्रकाशित आलेख अपेनंस pleasure and narrative cinema में लिखा है कि समूचे फिल्म उद्योग पर पितृसत्ता का शिकंजा कुछ इस तरह कस चुका है कि पर्दे पर दिखने वाली औरत एक बेजुबान यौनोत्तेजक प्रतीक बनकर रह गई है। यह वही पितृसत्ता है जो लिंग वंचना के कारण औरत को नपुंसक बतलाती है। फिल्म देखते समय कहीं न कहीं पुरूष दृष्टि में वायरिज्म अर्थात् यौनिक निहार की प्रवृत्ति प्रबल हो जाती है। सिनेमा देखते हुए दर्शक न सिर्फ आत्ममुग्ध हो जाता है बल्कि उसकी दबी इच्छाएँ भी नायक के क्रियाकलापों में चरितार्थ होने लगती है। आत्मसातीकरण की इस प्रक्रिया को माल्वी ने नाम दिया है, ''स्कोपोफीलिया याने खुद को निहारने का आनंद।''[1] पर्दे पर अंकित आकृति के साथ आत्मसातीकरण होते ही दर्शक जाग्रत हो जाता है। दर्शक का तात्पर्य केवल पुरूषों से है निहारने का आनंद केवल पुरूषों को मिला है। निहारनेवाल पुरूष दर्शक भी हो सकता है तथा सिनेमाई आख्यान का नायक।

जान्सटन के अनुसार सिनेमा में चिह्न प्रणालियों द्वारा यथार्थ की मध्यस्तता करता है। ''सिनेमाई यथार्थ का मतलब है निर्धारित संहिताओं के इस्तेमाल द्वारा पात्रों, दर्शकों के निर्मित चरित्र को ढँकना।''[2] मेरीडेन डोआन कहती है कि,''दृष्टि केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि द्रष्टा पुरूष है अथवा नारी।''[3] उनके अनुसार यह मुमकीन है कि नारी दर्शक का नारी पात्र के साथ आत्मसातीकरण हो जाए अथवा वह उसे आत्मासक्त इच्छा की वस्तु मान बैठे। दोनों स्थितियों में नारी दर्शक अपना अस्तित्व खोकर सिनेमाई छवि में विलीन हो सकती है ऐसे में नारीवादी फिल्म लेखन का दायित्व होना चाहिए कि वह नारी दर्शक को आगाह करें कि पर्दे पर दिखने वाली आकृति उसका प्रतिबिंब नहीं बल्कि छद्मवेशी छाया है। नारी दर्शक भी वर्ग जाति के आधार पर बटे हो सकते हैं। जेन जेन्स लिखती है कि ''सभी स्त्रियों की दृष्टि को समझना जरूरी है क्योंकि प्रत्येक स्त्री अलग अलग तरह के आत्याचारों का शिकार होती है। सच तो यह है कि स्त्रियों की दृष्टिको महत्व देने की कोशिश ही नहीं की गई।''[4]

नारीवादी फिल्म सिद्धांत की अन्य प्रतिनिधि काजा सिल्वरमैन ने हॉलिवूड की क्लासिक कही जानेवाली फिल्मों का जिक्र किया है जिनमें स्त्रियों को रोते, हाँफते, कलपते, सिसकते सुना जा सकता है। उसके अनुसार हॉलिवुड की फिल्मों से अधिकारिक स्वर पूरी तरह से गायब है। शायद स्त्री की आत्मगतता भी यही है।हिंदी सिनेमा में नारी बिंब का मूल उद्देश्य स्कोपोफिलिया को सुगम बनाना है। फिल्मकारों के समक्ष यह प्रश्न है कि ''वह निहारने की प्रवृत्ति को कैसे वैधता प्रधान करें ताकि राज्य, समाज, नागरिक तथा नारी दर्शक असहज न महसूस करें।''[5] हिंदी फिल्म के अलग अलग

दर्शकों के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की फिल्म बनाने की जगह फिल्मकारों ने एक ऐसा सूत्र विकसित कर लिया है जिससे सभी को चाक्षुष संतुष्टि मिल सके। ''एक ही अख्यान के भीतर कारूण्यता तथा श्रृँगारिकता को सम्मिलित कर हिंदी सिनेमा जेंडर के आधार पर बटे दृष्टिविन्यास को अर्थहीन बनाने का प्रयास करता है।''[6] नारी दर्शक की भूमिका अत्यंत जटिल है,''वह एक ओर उत्पाद है, वही दूसरी ओर उपभोक्ता भी। इसलिए उसकी मजबूरी है कि वह स्त्री देह के व्यापारीकरण को पर्दे पर देखे।''[7]

हिंदी सिनेमा में स्त्री बिंब का निरूपण कई प्रकार से हुआ है। इसमें अधिक प्रचलित बिंब है, देवी माँ का। फिल्मकारों ने नायिकाओं को राधा, सावित्री, दुर्गा, सिता, काली के तुल्य बतलाया है। देवी माँआदर्श है,वह पवित्रता का प्रतीक है,उसे अपमान सहन करना पडता है ताकि अराजकता को समाप्त कर नई व्यवस्था की स्थापना की जा सके। देवी माँ का अत्यंत शक्तिशाली बिंब 'मदर इंडिया' 1957 में देखा गया। देवी माँ के किरदार में नरगीस भारत माता का प्रतिरूप है। जब उसकी बिगडी संतान बिरजू 'सुनिल दत्त' ही उसका अपमान करने लगती है तो भारत माता उसे गोली मार देने में जरा भी नहीं हिचकती।

देवी माँ की दूसरी छवि राधा 'मीरा' है। रास लीला की परंपरा में राधा के तीन बिंब जुडे हैं, दिव्यता श्रृँगारिकता तथा रत्यात्मकता। हिंदी सिनेमा ने राधा कृष्ण के मिथक का भरपूर उपयोग किया। 'गीत गाता चल', बोल राधा बोल, मुकद्दर का सिकंदर अथवा देवदास। देवी माँ की तीसरी छवि सिता है जिसे अपने पति के हाथों अपमानित होना पडता है। वह अपनी पवित्रता को स्थापित करने के लिए अग्निपरीक्षा से गुजरने के लिए तैयार हो जाती है। ए. चंद्रा के निर्देशन में बनी 'तेजाब' 1988, बासू भट्टाचार्य की'पंचवटी' 1986 तथा श्याम बेनेगल की 'निशाँत' 1975 यह सिता के बिंब के उदाहरण हैं।

दुर्गा, काली की झलक हमें 1970–80 के दशकों में बनी तीन फिल्में 'इंसाफ का तराजू' 'प्रतिघात' और 'जखमी औरत' तथा 90 के दशक में बनी 'मृत्युदंड'में स्पष्टता दिखलाई पडती है। उन्हें बदला लेनेवाली की संज्ञा दी गई है। वास्तव में दुर्गा बदला नहीं लेती वह तो असुर और आसूरी प्रवृत्ति का संहार करती है। इसलिए इन फिल्मों की नायिकाएँ दुर्गा की प्रतिरूप है न कि किसी हॉलिवूड के फिल्म की तर्ज पर गडी प्रतिशोधात्मक नारी।

हिंदी सिनेमा में मुस्लिम सोशल कही जाने वाली फिल्मों का खास दर्जा है। इन फिल्मों का विशेष महत्व यह है कि नवाबी तहजिब की आड में कोठे में रहने वाली 'तवायफ'के चरित्र निरूपण का अच्छा अवसर मिलता है। ''कोठा ऐसी भौगोलिक स्पेस है जो गुजरे वक्त का प्रतीक होने के साथ साथ आधुनिकता के प्रभावों से विमुक्त है। कोठे में मशायरे, ठुमरी और गजल गायकी पूरी तरह महफूज है। कोठे की बिंब तवायफ साधारण वेश्या नहीं है। उसके कद्रदान शहर के तमाम रईस और उमराव है।''[8]वह इतिहास की त्रासदी है। फिल्मकार की खास दिलचस्पी कोठे पर होने वाले नाच मुजरों में है। कोठा तवायफ तथा मुजरा ऐसे अलंकार हैं जिन्हें 'पाकीजा','उमराव जान', 'सरदारी बेगम' के मुस्लिम सोशल के नाम पर भरपूर इस्तेमाल किया गया। यह अधिक लोकप्रिय है क्योंकि ''कोठे में नृत्य करने वाली तवायफ पुरूषों के यौनिक निहार की जरूरतों को पूरा करती हैं।''[9] इन फिल्मों में कैमेरा तवायफ के जिस्म पर ही केंद्रित रहे यह आवश्यक नहीं है। वस्तुतः 'पाकिजा' की नायिका साहिब जान, मिनाकुमारी के लाल रंग में नहाए पैर यौनिक निहार का बिंब बन जाते है। उस समय तक जबवह फिल्म के अंत में काँच के टुकडे पर नाचते हुए लहुलूहान नहीं हो जाती।

हिंदी सिनेमा में नवोन्मेष करने के लिए 1993 में फिल्मों में आइटम गीत शुरू किए। इसमें द्विअर्थी शब्दों, व्यंजनापूर्ण भावभंगिमा का प्रयोग करके तथा क्लोजअप द्वारा दर्शकों की वासना जाग्रत करना यह उद्देश्य था। आइटम गीत की शुरूआत खलनायक फिल्म के 'चोली के पिछे क्या है' से हुई लेकिन इस गीत को अश्लिल तथा स्त्रियों के लिए अपमानजनक घोषित किया। लेकिन यह गीत सफल हुआ । उसके बाद आइटम गीत माने हिंदी सिनेमा में रूपक बन गया। 'छम्मा छम्मा', 'शिला की जवानी', 'बाबूजी जरा धारे चलो...'आदि। इन आइटम गीतों का फिल्मों में सफल प्रयोग हुआ।

फिल्मी साहूकारों की वजह से हिरोइन के बदन का व्यापार चलता है, इस बात को लेकर राही मासूम रजा कहते हैं,''बदन का यह व्यापार उस वक्त तक बंद नहीं हो सकता जब तक फिल्म साहूकार के गद्दी के नीचे से निकाली नहीं जाती और यह तभी हो सकता है जब हम फिल्मों की इज्जत करना शुरू करें।''[10]

स्त्री को पर्दे पर किस प्रकार दिखलाया जाय? इसलिए उपर उल्लेखित तरह तरह के बिंबों का प्रयोग फिल्मकारों ने किया हैं। फिल्म अच्छी तरह चलने के लिए निर्माताओं ने स्त्री का यथासंभव प्रदर्शन किया ताकि पुरूष दर्शकों को कामासक्त आनंद की अनुभूति हो सके फिल्माकारोंने स्त्री की मर्यादा और मानसम्मान को दर्शक नजरअंदाज नहीं करेगा इसका भी खयाल रखा। बॉलीवुड ने इससे निकलने के लिए तमाशे तथा प्रदर्शन को चुना वह जानता था कि वायरिज्म से सिनेमा को नहीं बचाया जा सकता किंतु आख्यान को एक छोटे से हिस्से तक सीमित रखा जा सकता है। बलात्कार, कैबरे, आइटम गीत, तमाशे और प्रदर्शन को संकुचित रखने के उपाय है।

संदर्भ

1. बॉलिवूड पाठ विमर्श के संदर्भ में–ललित जोशी वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2012
2. सिनेमा और संस्कृति–राही मासूम रज़ा वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली,संस्करण 2015
3. भारतीय सिनेमा और हिंदी, गोवर्धन यादव, रचनाकार (ई–पत्रिका)
4. सिनेमा संस्कृति और नारी, रूद्रेश मिश्रा, www.Wordpress.com(webblog)-2013
5. व्हिज्युअल प्लेजर्स ॲड नॅरेटिव्ह, सिनेमा इन बिल निकोल्स मुव्ही ॲड मेथड ––लारा माल्वी

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org